भजन

तर्ज–सौ साल पहले

झूठ बदले खोया सांचा,सुख री सुहागिनी
पूछ अपनी आत्म सों,कैसी ये जागनी

1– मैं खुदी खड़ी आड़े,धनी सों मिलन न होने दे
ये समां न फिर मिलसी,इसे न व्यर्थ में खोने दे
अपने तो प्रीतम,श्री श्यामा श्याम री

2–इस झूठ का संग करके,अपना वतन दिया है विसार
प्रीतम के चरण कमल,सखी री आत्म के आधार
अपना ठिकाना,श्री निजधाम री

3– पिऊ प्यारे ने दीन्हा,हमें ये इलम जगाने को
उठ नींद निगोड़ी से,आए हैं कंत बुलाने को
चलना है उनके संग, अक्षर पार री
अपने धनी की तू,अंगना नार री